भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 667
8/02/2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

स्वदेशी जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली का विकास

667. डा. मु. तंबी दुरै:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार अपनी एक जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली को स्वदेशी रूप से विकसित करने का विचार रखती है जो राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप होगी;

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है; और

(ग) जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली के विकास के लिए कितनी धनराशि संस्वीकृत और आवंटित की गई है?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रीजीजू)

(क)-(ख) जी हां। आईआईटीएम-ईएसएम के नाम से जाना जाने वाला एक अत्याधुनिक पृथ्वी प्रणाली मॉडल (ईएसएम) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के जलवायु परिवर्तन अनुसंधान केंद्र (सीसीसीआर) में स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है। यह भारत का पहला पृथ्वी प्रणाली मॉडल है और आईआईटीएम-ईएसएम का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन का आकलन किया गया है। इसका उपयोग जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) द्वारा तैयार की गई नवीनतम छठी मूल्यांकन रिपोर्ट में भी किया गया था। क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन अनुमानों को दर्शाने वाली राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन आकलन रिपोर्ट विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं को लाभ पहुंचाने के लिए जारी की गई है। यह रिपोर्ट https://link.springer.com/book/10.1007/978-981-15-4327-2 पर उपलब्ध है।

(ग) जलवायु पूर्वानुमान प्रणाली के विकास के लिए 2017-2023 की अवधि के दौरान मॉनसून संवहन, मेघ और जलवायु परिवर्तन (MC4) उप-स्कीम के लिए आईआईटीएम – सीसीसीआर को 192.28 करोड रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

*****